



डॉ. रणधीर सिंह कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से सम्बद्ध दयाल सिंह कॉलेज करनाल, हरियाणा (भारत) के स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग में अध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से भारतीय साहित्य के भक्तिकालीन साहित्य में **‘संत गरीबदास की वाणी में दर्शन और रहस्यवाद’** विषय पर ‘डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी’ की उपाधि प्राप्त की। मानव-मूल्य, धर्म, संस्कृति तथा संत-साहित्य पर दो पुस्तकें प्रकाशित और राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियों में इन विषयों पर लगभग 40 शोध पत्रों का प्रस्तुतीकरण। 8 छात्रों का पीएच.डी. और 25 छात्रों का एम.फिल्. के लिए निर्देशन-इनके अध्यापन, लेखन और शोध जीवन के आयाम हैं। अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की शोध पत्र-पत्रिकाओं में 40 शोध-पत्र प्रकाशित – जिनमें हिन्दी भाषा एवम् भारतीय संस्कृति के संरक्षण एवम् संवर्द्धन पर बल देते हुए हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम को जगाकर भारतीयता का परिचय दिया गया है-जिसके लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की अनेक संस्थाओं ने हिन्दी सेवाओं के लिए पुरस्कृत-सम्मानित भी किया है।

Dr. Randhir Singh is working as Head of the Post Graduate Department of Hindi at Dyal Singh College, Karnal, Haryana (India) affiliated to Kurukshetra University, Kurukshetra. His specialization is in the fields of Medieval Sant Sahitya and Modern Literature. He was awarded Ph.D. from Kurukshetra University on the topic ‘Sant Garibdas Ki Vani Mein Darshan Aur Rahasyavad’. His two books published mainly focus on the issues related to human values, religion, culture and Sant Sahitya. He has also presented about 40 Research Papers in various National and International Seminar/ Workshops. He has guided 08 scholars for Ph.D. and 25 candidates have worked under his supervision for M.Phil. His rich experience of Research Guidance is a reflection of his teaching potential, writing skills and scholarship. 30 Research Papers published in various National and International Research Journals and Magazines go to his credit. He emphasizes on uplifting the status of Hindi Language and maintaining and promoting Indian Culture. This strengthens the fact of his unbinding inclination towards Hindi Language and proves his National Identity. He has also marked recognition at National as well as International Platform for his contribution in upgrading the status of Hindi Language and Literature.